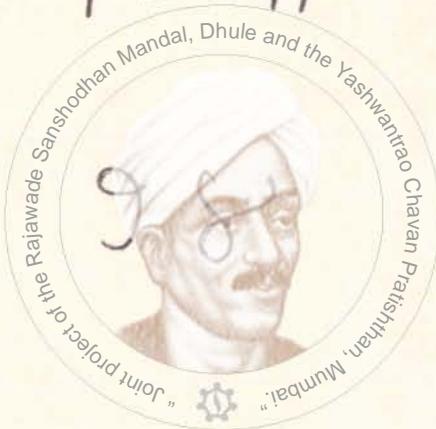


असाय

१६२

.८८



आध्यात्मिका ॥१२॥



(1)

(२)

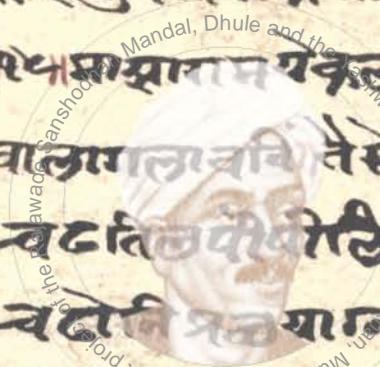
अजल दवर्णिणनमः। संतमंडकी दैसु त्रिशोण॥ वहस्यति ऐसेव सुर॥ आतं
 साहित्य सुमनां चे हार॥ उंपोनि गां घालुं यत्वे॥ जान धर्मशिवर लं प्रका
 श वं त॥ त्यावे ग्राहि त्रयं उत्तर॥ विदेष्वर युनाश भक्त निरंतर॥ प्रेमभरे
 उष्टुति॥ मति मंद ओता दैसतं अवधी॥ तरी शं शर सजाये विन लोनि॥ जै
 संभसमाप्ति ने उनि॥ वश आवहा न वाली द्वा॥ रत्नपरीक्षा वरीते बतु
 र॥ तेष्यं गम्भीरी देसान्वार॥ गारन इति सज्जाननर॥ परी वधीर तेषां वी
 टति॥ एव वक्षु वस्त्रे विति भ्रमर॥ परी तें सुखन जागो दुर्दुर॥ हं सरेती
 उक्त जाहार॥ परी तें वद्रासी प्रातीयै नाहि॥ दुष्टु होनि ने ति इतर॥ जों
 वीउतेषं आहेपात्र॥ परी त्यास प्रात्मकधीर॥ ने वो शरि मति मंदतो॥ एवी
 वसंत का नीको किंवा॥ पंच मस्त्र जाक विरसात॥ कागव संति सकल

(28)

परित्यासीरसहीनवक्रेण॥ वेणुं वागगर्जन्तं वृत्तिं गगनी॥ मयोरनाम
द्विपुष्टेष्यसरुनि॥ परिते व्रक्ताश्रुभानि॥ नेत्रीजैसीसर्वथा॥ नवको
रत्रं द्वास्तत्सविति॥ परिते व्रक्ताकृटनेत्राति॥ स्मृणौ निश्रोतामं हमति॥
सहसरहेनप्रेयावा॥ श्रोताभैरलीगां च बुरा॥ गंधरसमाजे जायार
ज्ञें विरसं घटतांशोरा॥ प्रदावरीरजा॥ रवजैसाभा॥ आसो येव्राद झो
ध्यायावेजांति॥ वीत्रकुर्येण हितेर द्वाति॥ सुद्धनिगंधवनीश्रीति॥ व्राग
क्लयें उद्दीला॥ उद्यरीसीरु॥ वृत्तारपांजातां॥ श्रोतापरीसाविमागील
व्रश्चा॥ हठभारेसीभरथत्वता॥ वीत्रकुटासमीप जाडा॥ १५॥ तवंत्तेभुध
र जावतारा॥ वीत्रकुटाखलेंसौमित्र॥ प्रक्लेंवें वीततोहं क्लभारा॥ गजरेंये
तांहं देरवीडा॥ १६॥ वोऽरवीलाजाए लाध्वजसंक्रेत॥ आलेक्वव्लेच्छात्रुश्च

Joint Project
of Sanskrit Manuscripts
Mandodari and the
Vaidika Chavhan
Digitisation Project,
Mumbai.

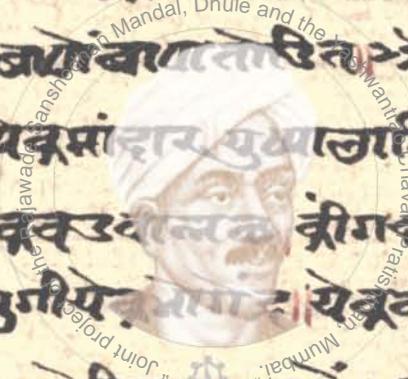
रथ॥ स्वप्ने कै कै इनें पाठवि लीय थारे॥ वनंतेर हुना थवधावया॥ अहे सु
 धामी आलेयेश॥ हें जरीर घुपति सक् रुक्षता॥ तरी हे ही गोष्ट अनुचित
 ॥ सुधज झुत वृनि नसी॥ एथा माशाम यवलावनि॥ हे दृढ़ भर्त्या आलेसी ह
 वरुनि॥ तरी जैसा वोन वाला गाला चरि॥ तैसे जानीत सैन्प हें॥ एथा विक्या
 कीर्णि वरी देखा॥ कैसा नट तिउ पीछे भेड़ि का॥ वृष्ट्यांत विकुम ब्राका॥ कै
 सी गीठ वेलनेया वे॥ ७॥ चर्टो मृक्षा नाम वेसीरी॥ पतंग जैसान्त त्य
 करी॥ उर्णीनामी॥ यांतु वाभीतरी॥ वारण कैसा बांध वे॥ ८॥ उर्णी पांकड
 ना॥ कैसा बांध वेल पंचानन॥ दिलेंद्रा सीजानी द्वाधरुण॥ कैसी नै इलैंदे
 आदात्रा॥ ९॥ दीपा चंते जदेखोन॥ कैसा आह ठेल चंउकीरी॥ तैसा जीवि
 र लक्ष्मण॥ कैसे जीवोन येत्रा पावति॥ १०॥ भार हेतुनि समिप॥ शृणन लागतो



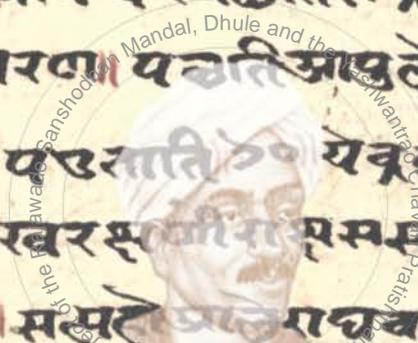
the Rajawade Sanshodh Mandal, Dhule and the
 Chavhan Parivaran, Mumbai
 Joint Project of the

३८

चटविले गाप॥ बाण सोहित जासुप॥ संव्येरहीत तेकान्ती॥ २॥ वटेस
 ग डाहित बाघ॥ शोदूरि जैसे उज्जवे भार॥ तैसा सो बापद्ये मपग्र॥ भया
 तुरजाहाले॥ ३॥ त्यावाणा वेंकावयानि वारण॥ वीरसरमाव छवात्रुम्
 होदां चेंसमान संधान॥ बाणो बाटा तोहित॥ ४॥ येकचंद येक मित्र॥ रमांवरुपा
 वंडुपांवर॥ कीषेकमेरु येकमांहार॥ युधालालीभी सबले॥ ५॥ येकस्तु द्वये
 बानिरात्र॥ येकद्वारानी येकवउवान्द्र कीराम्ब ऋजाति दिर्मेळ॥ विष्णुं प्रा
 ण्डें भीउति॥ ६॥ येकद्वारासु गीर्ये॥ येकद्वारिए येकद्वारि श्वामित्र॥ तेस बा
 त्रुम्भजावी सोहित्र॥ बाण सोहित तदरस्यर॥ ७॥ येकयेकावी सोहिति बा
 ण॥ तेवरस्वावरुडविति संपुण॥ तेणों बाणें गंडपजाला सघन॥ वंड
 कीर्णनदिसे॥ ८॥ रामनामाविज्ञांकित॥ बाण सुटति मनेजमंहित॥ रघु



नाथनामेंगर्जति सुसाट वीयेताति ॥५॥ वाटे वोउवलप्रबयेकाढ़ ॥ सक्
 ठवन वां सुटहायठ ॥ क्रष्णे शर पठतिसदृढ़ ॥ कउवेघतिपर्वतावे
 ॥६॥ संलोनिहुं प्रातपावरण ॥ यचतिजापुलेलीवदेउन ॥ येकधांवती
 धापाहाडुन ॥ मुर्झियेउनपउताति ॥७॥ येकद्वाणतिगाससदक ॥ आले
 रामावरीतुंबक ॥ येठोंपरवरस्तीरा समस्तकल ॥ वीम द्रोटिनिवरीते
 ॥८॥ तेंवैरस्मातोनिजांतरी ॥ सस्टे प्रालराघवरे ॥ आतांसौमीजावीकैं
 वीउरी ॥ आनर्थियरीवोउवठा ॥९॥ आसाक्रृष्णेकवरसमन ॥ आले जे
 थेंरहुनाथ ॥ गोष्टीपांतां बोवधिवठत ॥ संद्रेतहवितियेककरे ॥१०॥ येक
 रुदनकरुपंरियोहितिहाका ॥ वेगिंयद्वित्राधिनाथका ॥ आतांगुटवीधरीं
 उयविंकां इदुनापकाउठवेगि ॥११॥ नभरेज्ञेजार्धनीमीषा ॥ तेंश्रीगामेंव



५८

टविलेंधनव्या॥ जैसाभावतांकंठंद्रा॥ मुदेवाहि रतैसाभालगा॥ ४० क्रमि
सद्यणेभाषोधानाश॥ तुम्हीमनिन्नक्षुवेंउच्चीत॥ क्राढहिकीश्वरकरुभा
लीपांयग्राष्ट॥ रवंउविरवंउद्गीनबाही॥ ५० पउत्थाणकाङ्गासीदेइन
धीर॥ रसातक्काउविजातांक्षीनस्ति॥ तुम्हीसपस्त्वैसाधरनधीर॥
श्रहनवर्णकरीतपैः॥ अप्पवाक्कावेभाध्यायन॥ गामसीसांसद्रसंस्वा
ज्ञान॥ पातांजकीअश्ववायादुण्॥ दा. यत्त्वर्वक्कराजी॥ ६० जासोपाठी
सीघातुनिब्रह्मण॥ पुटेंक्कावित्तुउनहन॥ तोंध्वज्ज्यीन्द्रकोठाविले
(पुणी॥ ग्रन्तुप्रबाधायाकीतसे॥ ७० असुलेमेटीक्कागयोंउत्कुंठीत॥ महादी
तज्जरलाभरश॥ उश्मणांपासीसीतानाश॥ शृष्टानउगातांपातछा॥ ८०॥
प्रात्मकेसोमित्रसी॥ बारेभरषभाज्जामेटीसी॥ तुंक्षीमर्घयासीयुध्यकरी

Joint Project of the Sahajawadi Sanskrit Mandal, Dhule and the
Sahayadri Sahitya Akademi, Mumbai.
Digitized by Sahayadri Sahitya Akademi, Mumbai.

सी॥ पाहे मान सिंही वासनि॥ अ॥ ऐसें बोछतांग जीवने त्र॥ परी विरश्रीये
 नं वेशी लासौ मित्र॥ परी सो रितांग हेशर॥ मगर घुविर क्षाय करी॥ अ॥ हा
 ति वेंधनुष्य ही रोनि॥ श्रीग में घेतले ते सहनी॥ सौमित्र उगाहा हट करणी
 हांस्य वदन करोनियां॥ अ॥ श्रीराम वारे तांपर्य वाळ॥ आवदें वित के बाण
 जागा॥ जैसें निज ज्ञान ठसावत् सबन॥ प्राप्य वउत्ते विंदि रे॥ अ॥ भरशा
 सहित आयोध्ये नेजन॥ सर्वी॥ लोदि लारघुनंदन॥ जैसी नित्रा संपत्तं
 कंउ द्विण॥ उद्यात्व किं दिगते॥ अद्या तौ भरशा सिनधर वेधीर॥ प्रे में धांचं
 घेत छिसत गा॥ वाटे सीसांग न मखार॥ वारं वार घाली ता॥ अ॥ दीखुं
 त दिव समाता गे छी॥ तों बाक ब्रें समीय देखी उरी॥ दीगाये वनि दुनिपर त
 री॥ वडें पाटो की लंगी धांचोनियां॥ अ॥ कूंही रात्यादे बोली खरीत॥ धांचं घे



तसुधाक्रान्तं॥ कीयांशीकृनि विउद्गायादेवत्॥ जे विंधांवतउम्भाकांडी॥ ८॥
॥ कीसपुठदेवोनिदिव्यदम्॥ मेपावेजैसाविहंगम्॥ भरथेंधांवोनितैसा
गम्॥ वरणसरोजीस्यक्षीलिपा॥ जैसेलोभीपावेजीवणाधन॥ तैसेभ
रथेंधरीलेहटवरण॥ नयनोदकेंकरन॥ बुलेंहाल्यणरामपायं॥ ९॥
गउवलोनियांदोहिंकरण॥ बंधुसरीहहइंधरीलेंआदरें॥ जैसतजयंतुष
त्रसहस्रनवें॥ प्रीतिकरुणीआतुरि॥ १०॥ कीशीरसामरींलहरीयाउ
ठति॥ जैस्याएकांतयेवपिसक॥ कीरेदानंत्राक्षीकाश्रिति॥ ऐक्षयेति
परस्येरें॥ ११॥ ऐसाज्ञानंगिराभरथ॥ तोंत्रात्रुग्रलोयंगयोंघालित॥ परम
प्रीतिरघुनाश॥ आक्षंगीततयातें॥ १२॥ सबलजायोधेवेक्षाद्युण॥ रामासी
नेटतिप्रीतिकरुन॥ सर्वहन्तभारप्रज्ञाजन॥ कृतिनमनरामासी॥ १३॥ तसु

Joint Project of the
Gangadawadi Sanskrut Mandal, Dhule and the
Yogeshwar Chavan Library,
Mumbai.

(6)

आ०
१२

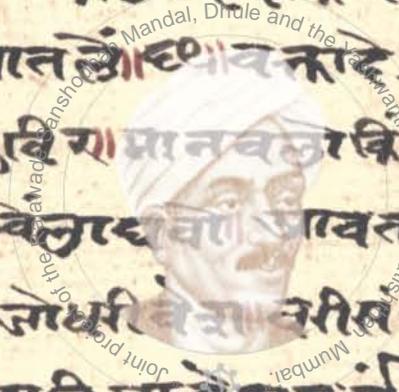
पणा भरथवत्तु द्वा॥ परस्परं हेति होम अर्चाकं लिपा॥ मग सुमंत प्रधान येउन
 ॥ रामवरण वं रीलो॥ ६॥ मग सुमंत हृषीराम रापा॥ पैलव विष्ट प्रातं रीजा
 लिया मात्या॥ तर्वंया द्वार शकुर वर्ण॥ ८॥ रवेन धरवेते काळी॥ ८॥ सामो
 रान्वाली लार धुनंहना॥ नेवते आपा॥ आद्या ध्याजन॥ जैसा कांवे होना
 रायता॥ आनेक श्रुति वेष्टीला॥ ५॥ युनिखांव विष्ट वर्णवर्णी॥ रामेणुरुस्वर
 गवंरिलेभाकं॥ जैसा महन्दर नाव वरण कमकं॥ स्विंदठेविमस्तक॥ ६॥
 तोंकौश्चाल्या सुमित्रामाता॥ तां वीवहृनेजवकीदेवतां॥ धांवो नियेतां मसु
 मित्रा सुता॥ ऊतरति रवालु सहो धीजनिं॥ ६॥ कौश्चाल्ये वरणीमस्तक॥
 ठेकोनिकोले रधुनायक॥ लृणो सुरवीक्रिंमजनक॥ श्रीदवारथ ह्याव्यरी॥
 ७॥ तोंजालायेव नीजो धरा वा॥ रहन करति जनसकल॥ सुमित्राकौश्चाल्य

६४
सीड़ः खक्कलोदा॥ नाहिं पार तथा दें॥ ७॥ विशिष्ट मृगे रघुनाथ॥ लुम्बा
विषेण न सह वेसर्वथा॥ रामराम स्मर याकृति तं॥ ग्रोष्णं शाप्रति गोदा॥ ८॥
ऐसं वन ऐक तां वालिं॥ करुणा सामर माश्च तालिं॥ वीभ गं बुधरान यति
॥ तेषां लिप्वा लीला॥ ९॥ सुन्दर सुंदर वै लाप घोर॥ पीति यात्रा नीर रघु
वीर करी ध्रापार॥ क्षणे पुष्प संयामा गर॥ औद्धार शवीर जो॥ १०॥ ता
वायुध्या वीरेव॥ पाहति प्रान दि इंद्र दिदेव॥ दृष्टपर्वति क्राहि सर्व॥ है
स युधि त्री द्विलो॥ ११॥ श्रोते सुरा तिनव उरश्यं॥ ए राण ए रुष रघुनाथ॥
तो व्योक्ता एविं पउ त्रहे प्रात॥ आसं प्रति दि सत से॥ १२॥ जो त्रग हं द्यर रघु
विर रगम॥ तो विष्व विज प्रकां वित दम॥ तो व्योक्ता कुक्ती तपर ब्रह्म॥ वी
तीय लागि क्रां जाता॥ १३॥ वीष व्रद व्रेविं अलासा गरा॥ उस्तुता व्या वीली



(४)

ग्रहीयीवरा॥ नारभुषितस्तानिवरा॥ सर्वबाधावेविंजाली॥ ८१॥ यी
 तासपांदीहरीहेमापीलप॥ कल्पवृक्षवेविंनिर्वरजाला॥ प्रलयानी
 वेगेन्प्रथमधत्तवेविंपात्तेण॥ ८०॥ वक्तादप्रस्पान्तरा॥ श्रोते ऐवरजीसा
 हरा॥ पुर्वक्रमानंदरघुविश॥ प्रानवलारविष्वतरला॥ ८०॥ जगहुरुजे
 देवाधीदेवो॥ दाविमायेवलादवो॥ अवतारकारणांवीटेवो॥ लोकविभि
 ग्रावोराविला॥ ८१॥ नटजापुरीवेश॥ उत्तमादपांकुरीविशेष॥ पालाली
 जगद्परांजादिपुरुष॥ दाविभावेनासवंक्वा॥ ८२॥ ऐसीउष्टुतिशङ्ख
 रत्नमांदुस॥ एुपाग्राहीद्वश्रोतेपावलेसंतोष॥ निसंहेहनिःश्रोष॥ जे चं
 तमनाऽसुष्ठोदि ८३॥ कीवैगम्येनिरसेक्षाम॥ कीज्ञानीविनेजेवी
 अम॥ जैसानिधानांदुनिपरम॥ दारयासर्वतिघाला॥ ८४॥ वृत्तीतांसंशा



४८
वायावेंनीर्क्षिना॥मागेंग हीछें अनुसंधान॥तरीये गोबीसहुषण॥मवे
आही नठे वावें॥७५॥ग्रस्सामाजीलिङ्गलाहारब॥तोब्रह्मायालागेवेळ
॥कीं ज्यानाध्यामाल्जीरसाब॥वेत्तभायनराहेलें॥७६॥वोरवाट्टुक्कवाव
यापुर्ण॥आधीद्वलागलायेद्वहिन॥तमित्तगालीनं दुष्टप॥कुरासरज्ञानन
ठेविति॥७७॥गत्रीमाजीसख्तेंगहति ररीमुर्यउगवतांसवेंकीवालुति
॥छायेसीयांशीक्कवेसति॥मवेंकीज्ञाने निजमाझें॥७८॥समुद्रावेंभरतेंवो
हटो॥सवेंकीमामुतेंवित्रोष्या॥कींक्षपक्तुरंगवयेटे॥विसांवांषेउनि
ग्रामुति॥७९॥तेविंपरीसपुदीलक्कशाश्च॥ग्राठवोनिपीताद्वारथ॥शोका
कुठीतजनक्षपमात॥क्षणयेक्कज्ञाहाला॥८०॥मगवविष्ट्ट्वालश्रीरामां॥
प्रयागप्रतिजाऊति गुणग्रामा॥उत्तरद्विग्नाकूरनिनिजधामां॥द्वार

"Joint Project of the Rajawali Sanskrit Mandal, Dule and the Varanasi Sanskrit Manuscript Museum."

(८)

शामि बोहविजे॥८॥ वीतेकप्रहृतवृविबोलता। जेपतनिं पउलाहचार
 श॥ परीहेगोष्टीजासंमता॥ बोहृतां अनर्षवध्येसी॥ उज्यावेनाम घेतांजा
 वयि॥ जीवउदरलेठैक्रोहि॥ ताजसुलापीतापतनिंयादि॥ जाठत्रिंश
 उनां॥ ९॥ आसोप्रयामा प्रतियेउन ऊतरक्रीया सर्वसारुन॥ पीयप ती
 निजपरिस्थायुन॥ आलेपरनेनयात् कुटा॥१०॥ सकृदत्रष्ठिजातीजा
 योध्याजन॥ द्वैसलेश्रीरामासिद्धेन॥ मगधरथं घलोनिलोरांगण॥ वर
 जोउनिउभावाकला॥११॥ सुवर्जयज्याजीयुगणयुरुषोनमामा या
 चक्रवालवापरब्रह्महं॥ विरंवीजनकासुखविश्रामां॥ पंगङ्गधामांसुग
 ण॥१२॥ हेरामकरणांसमुद्धा॥ हेरविकुलरीककामाघवेंद्रा॥ सवनिंदमह
 नांगमवंद्रा॥ प्रतापरद्वजगहुरु॥१३॥ हेरामरावणादर्पहारणां॥ हेराम

the Bhilawade Gainshotien Mandal, Dhule and the
 Chavhan Prabhuji, Mumbai
 Joint Project of

४८

भवहृये प्रोवनां हेरामआहिल्योद्दारणां॥ मध्वरस्तुणां बीताधवा॥
 ॥८॥ हेरामकौशल्यागर्भगत्नां हेराममायाजायारथमप्रोवक्तानानां॥
 हेरामज्ञगदुषवां प्राणपुणां ज्ञगदुसां॥ शनवक्ताननवैश्वान्नरा॥ म
 महद्वजाविदभ्रमग॥ आज्ञानातीसीरुद्धक्षदिवक्ता॥ समरधीरारघवे
 इ॥ ९॥ हेरामभक्तवात्कृजवधा॥ अमव्यक्तोरवेधवचंद्र॥ कीज्ञाव
 र्वेषयउतांजवधा॥ वातकालामेवंवेंक्तां॥ कीज्ञीताक्रांतासीज्ञी
 ताप्रवंगि॥ सांपडेयुवेप्राप्येकरांती दीरुद्विषट्केयांगरांपि॥ कृष्णवस्तु
 उगवत्ता॥ १०॥ उपवासिमरतान्वक्तोर॥ यत्वापांवत्यांधांवेंद्र॥ संसा
 राजदेववस्तुगेंद्र॥ यानंगमोहनंआनंग॥ ११॥ कीपतिव्रतेसीप्राण
 नाशमेटल्या॥ कीसुधीतापुटेंसीरावीजाल्या॥ कीसाधकासीनिधज्ञोउ

Joint Project of the
 Research Department of Sanskrit and the
 Sanskrit Department of the
 State Election Commission, Mumbai
 and the
 Sanskrit Department of the
 State Election Commission, Dhule and the
 State Election Commission, Nashik.

(१)

त्रा॥ आनंदजात्तैसत्याम्हं॥ ७॥ हंसेदैरविलाभानसरोवरा कीप्रेम
 कम्बेटलाउप्रांवरा कीसंकुलीहमजापार॥ उर्वरव्रात्मणांसिदिध्यले
 थपतैसाआनंदजात्तासानसि॥ आतासत्वरवलाजायोध्येसी॥ सांभारा
 वेंबंधुआम्हासि॥ श्रीहवारशांववित्याम्हं॥ ८॥ आपुलेंगाज्यसांभारावें॥
 गोव्रात्मणांसिप्रतिपात्रावें॥ मापत्रमनोरथपुरवावे॥ आतांपरतावें
 सत्वर॥ ९॥ जननिंआमुवीप सत्वरुर॥ पत्तदेतहोतिराज्यभार॥ जै
 संदेहोनियांसीर॥ युदगीयासिकुजाक्वांधीली॥ १०॥ पुज्यमृतिसांडुन॥ जैसे
 उवर्वेष्टीवरण॥ राज्यकुमरवरसांडुन॥ नवरीदिध्यलीअज्ञारसक्ता॥
 ११॥ परोनिदेवांववीवर॥ घातलामेंवताजावार॥ नागवोनियात्रास
 मग्र॥ अन्नउत्रघातठें॥ १२॥ यूपासयाक्षोनिरसाक्ष॥ प्रीतिनेंघेतलेंकनक

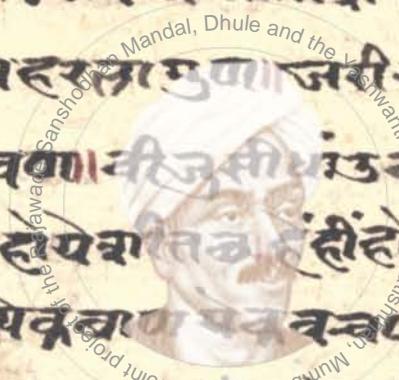


१४
क ॥ पुत्रसांखोनि तेजान्न ॥ गुंजजैसि घेतली ॥ ॥ गरघे उनटाकिचाहे ॥
अंधः कारघे उनीस्यजीठे दिनकरा ॥ पावभीरकाऊनि सत्त्वा ॥ कांवरेले
रहीलया ॥ भा ॥ परीसत्पाणुनघेतलाखवडा ॥ यंरितदेवोनिघेतलावेया ॥ वी
तामपरीगो पूर्णोनिगोष्वासा ॥ पलांउघेतलाखवलेंवी ॥ ॥ अमरतराको नी
घेतलेंकांजी ॥ क्रष्णहसतेहुनिलालवीलीभासी ॥ क्रामधेलंदवुनिसह
जी ॥ अजाणुतीआदरें गनिजसुख व्होनिघेतलेंदुःख ॥ क्रत्तरीराको
निघेतलीभासव ॥ सोनेंराकुनिसुख ॥ सन्देशघेतलेंथ ॥ सांउनियांगायेकेले
आहरेंस्थीलीअद्विष्टवें ॥ ज्ञानसांडोनिघेतलें ॥ अज्ञानत्ववलेंवीष्ट तै
संवैकैइनेंकेलेंसावार ॥ वनांदवउनिजगदोहारा ॥ मजधावपाराज्यभार
॥ सीहजालीसास्यें ॥ सर्वआपाधकरणीशमां ॥ आयोध्येसीन्वलावें

the Rajjawade Sanskrit Mandal, Dhule and the Yashwantrao
Munshi, "Joint Project of"

(१०)

श्रीरामां याउपरीजगदात्मां ॥ काये बोलिलेतें ऐका ॥ सुर्यमार्गनुदेव
 रीतां भ्रमणा ॥ नेत्री अंधत्वपावे अन्ना ॥ मत्रा कृष्णी श्रुति कराएन ॥ जरी मे
 रुवैं पहेल ॥ पाषाणप्रहरामामुण ॥ जरी वाघोपेतलमोडुन ॥ कीरीपी
 लीकाङ्गोधुनसीधुजीवण ॥ वीजसीभांउभ्रमत्राकृधरी ॥ ॥ नउप्रिति अ
 न्तीजाल ॥ वृरुरुतुवर्णरेहयका तब ॥ हींहोइलसर्वकाल ॥ परीवन्वनां
 सीवलनदेसाश्या ॥ येकवारा येकवारा ॥ येकयतिं वृत्तिपुण ॥ वौदव
 रुधें भ्रत्यां विण ॥ कशापीआगमनध उनां ॥ ॥ ऐसेनिश्चयावेंवन्वया ॥
 बोलताजालारधुनंदन ॥ आहुले आग्नीनं ॥ सुमनजैसेवां ॥ ॥ मगभर
 शें वेतविलाज्यात वेद ॥ प्राणाद्यावयाजालासिद्धि स्त्रियो हादेह करीनद
 ग्या ॥ रामवियोगनसोमवे ॥ नामगमाहुराजवाल्मीक्रमुनी ॥ भर आसी ॥



१०८

येकांतिनोउनि॥मुरक्कावर्षप्रावद्वाकानि॥नविष्यार्थसंगीतउरा॥५४ते
धेवतांकैसुत॥उगाचराहीलानिवांत॥मगाउठोनिजनद्रज्ञामात॥ह
इंधरीभरणातें॥घायापुञ्जाहसिंकरण॥उसीले परथाप्येनयन॥क
रंकुरवाकीलेवदन॥सपाधान करीतस॥५५॥देवबंदीनेसोउउन॥यौ
दवरुषांयेतोंपरतोन॥रावरदहाउलेलुन॥माकृदिधर्तीपारणाते
॥६॥वैद्यवरुषेवैद्यसिवसपण॥धावेदिवसीयथाशजाव॥मा
धानांयेइत्यंउक्तिण॥नेटैरुजागि॥५६॥भरथम्हणेमटब
तां॥मगदेहत्यागीनत्पतारमन्वरणीठेविउमाया॥प्रेमजावस्त्राजा
धीक॥५७॥भरथमागुताउठोन॥विचोक्तिश्रीगमाचेंवदन॥आमच्छक्तराजी
वनयन॥तैसाचहदइरवीउरा॥५८॥भरथबोठेसहदवन्वण॥ग्रीआयोध्ये



(11)

सीन जायें परतोन॥ सकृदभ्योगमंगलस्तान॥ त्वज्जेनि जाइननं हीग्रा
 मां॥ आवष्ट्युणेरघुनायक॥ मयंतीमयेपदुकासुरेव॥ भरथा सी
 दीपथाक्षोक्तहारक॥ येरं प्रस्तुतिं देही न्या॥ दीवमस्तु विराजे वंद
 तैस्यासीरीं पदुकासुंदर॥ क्षोक्तहारलासमग्र॥ सीतल बारी रजाहते
 ॥ अंगा जैसें द्वं त्रीस रतां नास्तमरगा॥ सीतल जात्रा आयांरि मण॥ तैसा
 वप्रेमठभरश्चताण॥ अंतरीं पुत्रनिवाला॥ शत्रुघ्नासह्यणेरघुना
 श॥ लुंजायंतीप्रधानसुमंत॥ भाज्यभार वाल वावा समस्त॥ यशान्मायें कृ
 णी॥ अद्य सदस्तवासंतज्जन॥ येष्वं विंहटेविजेमन॥ वेदमर्यादानुचंघा
 दिपुणीप्राणांतहीजातिणां॥ वरता राष्ट्रायंतीपरधन॥ येष्वं कृदानतेवि
 जेमन॥ उरत्पाणाकेदुर्जन॥ यांत्रें अवलोकनकृतावें॥ वरसाधुसंतमौ

(118)

द्वास्मणा॥ या वेंसदा करा वेंपाना॥ सकल हृष्टं सद्वतुन॥ विधर्मपुणि
 राववावा॥ पथजरीकुवाकाळ पातलाबहुंता॥ परीधैर्यनसांडावेंयथार्था॥
 गुरुजनें पुण्यपंच॥ नसोडावासर्वश्चा॥ ७॥ काश्चाक्रीतनेषु रापाश्रवण
 काळकर्मवायेणां क्रस्ता॥ आषुलावास्त्रमधर्मपुणि॥ सर्वश्चाहि नसांडा
 वाण॥ संतां चानक्रावाशान गाही॥ नजनि श्रीजवावें प्रांग॥ सांडुति
 सकलकुणगा॥ सक्तां चैव सो॥ ८॥ त्रिलिङ्गासीवद्दृपावे॥ वर्मको
 न्हूवें नबोत्रावे॥ वीक्ष्य आवें जायगावें॥ आत्मस्तुपनिधरि॥ ९॥ सत्तां गध
 गवत्जाधी॥ नायक्राविउर्जनां चैखुदि॥ कामक्रोधादिद्वयदी॥ इमवावेनि
 जयराक्रमें॥ अपीं जालों सज्जान॥ नधरावाहाजाभीमान॥ वीनोहें हिं पैंहे
 लण॥ नक्रावें सहस्राहि॥ १०॥ त्रामदमादीसाधने॥ दुरनक्राविं साधकाने॥



(४)

जनजातिज्ञातवाटेनै॒ खं सि॒ मार्गे॒ हा॒ विजो॑ ॥८॥ त्रो॒ कृमो॒ हा॒ वेत्ये
 देषुणा॑ आंगि॑ आद॑ बति॑ येउन ॥ वीवे॑ क्वो॒ उणा॑ षुटें॑ करुन ॥ ज्ञानवास्त्र
 यो॑ जावे॑ ॥९॥ क्रामक्रो॑ प्रमदमठर ॥ हृपहृव्येउन्नद्यावेत्करा॑ ग्रायुष्य
 शृणीवजागो॑ निसाचारा॑ सारसारवि॑ वारावे॑ ॥१०॥ सृणीवजागो॑ निसा
 चारा॑ सोउा॑ विषयावीलज्ञातरा॑ सदुरुचेववनिं॑ सादर ॥ वीत॑ सदाठेवि
 जे॑ ॥११॥ है॑ वें॑ याले॑ भाष्यशोरा॑ ॥ प्रावाणत॑ नधावावत्प्रनुमात्रा॑ येक्तां॑ वगेले
 समग्र ॥ क्रद्धीरनसंडावा॑ ॥१२॥ क्रम॑ उपत्रास्त्वपानिधान ॥ वर्षते॑ स्वाति
 जबुणा॑ तेसुमंतश्चतुष्प्र ॥ त्र्यासुक्तीवेंतसां॑ टाविले॑ ॥१३॥ वाहाम॑ तत्त्वर्था॑
 पञ्चद्र ॥ निवाले॑ भरथकृष्णविक्रोरा॑ ॥ कीरा॑ पववनि॑ सीरसागर ॥१४॥ उपम
 न्पसाचारभरथतेष्ट ॥१५॥ सूर्युंगवतां॑ निरसेतमज्ञात ॥ तेसें॑ गमवत् ॥१६॥

नह दय वो वाल॥ मग भर श परतो निता काच॥ नंदी ग्रामिं राही लाल॥ ४५
करो निषाते चें समाधान॥ सकल ब्राह्मण प्रजाजन॥ मुमंत्र आवंती वातु प्र
॥ गठे परतो न आपो ध्येसी॥ छाँ श्री राम पाठु वासी हसनि॥ वातु प्रकारे उ
त्रधरणी॥ मग गाय वाल विजन विनि॥ नाम समरणी सावध॥ ४६ सवासणा
येत नंदि ग्रामासी॥ मागु ताजाये आपो ध्यासी॥ सकल एष्वी वीरा राजा सी॥
धाक भर अजाणी वातु घांच॥ तिसंवत्सरीं वरभार॥ आसो नंदी
ग्रामिं भर श वि रा॥ भुवान दति वा॥ भार समार॥ निर्विकार वै सलाल॥ नं
दी ग्रामांज व ढी आर यांता॥ यथो दुर्दी कुरुणग हे भर श॥ श्री राम पाठु का
विराजता॥ रात्रे विवस भस्त्रिं॥ ४७ वा जे ज्ञावउ ते श्री राम प्रकत॥ ते ही भर शा
ए सविरता॥ कष्ट कामियां प्रद सुत॥ या गवरो नि वै सले॥ ४८ वट दुष्टों ज



The Radhawade Panhodai Mandal, Dhule and the Chavhan Priyadarshini, Mumbai Joint Project

(13)

रावलुनि पव्रुभमंगल भोगत्पद्जुनी ॥ वल्ललेंवेषु न उलासनि ॥ वैसले
 ध्यानीभासाव ॥ ८० ॥ न शेत्रांतज्ज्ञसावं द्र ॥ तैसामध्यें भरथसावार ॥ रात्र
 दिवसरामवीत्र ॥ भरथसांगे समस्ता हं ॥ ८१ ॥ कीवासानसो वरीं ॥ वैसतिरा
 जहंसाव्याहमी ॥ भरथाभावतेसाक्षयति ॥ वैष्णोनियां वैसले ॥ ८२ ॥ ब्रह्मिधर
 क्षणातिश्रोतियांसमस्ता ॥ नीत वार्ते पहरी पाप्तुरोक्ताशी ॥ रघुनाथवी
 चकुटींतआसतां ॥ द्रायेकप्राव ने छी ॥ ८३ ॥ वृवी-बीवा हृष्टलपांतुस ॥ उष
 इतांपं उतपावतिसंतोष ॥ इतरकुमारिमतीमंदास ॥ मत्पपरीशानक
 ब्रह्म ॥ ८४ ॥ आसोचीत्र कुटीतरघुनाशआपण ॥ मीलुनि बहिर्मुखब्रात्म
 ण ॥ द्वापातिरामालुंजायेयेषुन ॥ आम्हांसिवि भ्रतुशेणी ॥ ८५ ॥ लुझीत्तीप
 रपसुदर ॥ यावयातपति उसुर वाल्मीकि भ्रात्यसावार ॥ हैसंघीजा

१२

1301

केजापापा॥६॥ वनीहुनवस्तज्जरीसावार॥ श्रीशिरादुषतप्रार्थिष
 य॥ हठभारयेषंयेगार॥ तुजकरीतांरघुविरा॥७॥ स्वगौलिद्वेष्टितुज
 पास्थिं॥ येषुन्नजयेतुंनिश्चयेसी॥ नाहिंतरीप्राशसांसी॥ सागुणीजाउनी
 धरि॥८॥ श्रीरामत्वेणब्रह्मणांजगुणी॥ लुम्हीनीश्चीत्यासावेष्टः
 करणी॥ श्रीकृष्णहिपोरिन्द्रसामरगती॥ आशसात्कोणागणीयेष्ट॥९॥ प
 रम्यविश्वासिब्रह्मण॥ हृपाति य य॥ द्वेष्टिशरुण॥ हस्यायुचीकृता
 खेतशुप्तनीआमहालापीरसी॥१०॥ हस्तांसिनपुरेसमरंगणी॥ वा
 हीक्रांतिनातिसरोनि॥ यावोल्॥ वावि श्वासधर्षणी॥ कदायेषंनगाह
 वै॥११॥ मगसककीक्रिंकूरुनियेकवि-वार॥ रात्रीन्वउवेनिसमप्र॥ कुटुंबे
 वेउत्तिंसत्त्वग॥ गलेविप्रपठेनियां॥१२॥ उपरीप्राणःकाढीउठोत॥ श्री



१६
 रामपद्मेत्रमिजन॥ तवंतेगत्वगेलेपकोर्ना॥ राजीवनयनकायेकरी॥
 ए॥ येकवाचिकउरल्लखुर्णोजोसहापाजतपोधन॥ भुतभविष्यवर्तमान
 ॥ त्रीकाक्षानजयासि॥ द्वीवायुसंगेत्तद्वृण॥ परीमाप्वलनसोरित्ता
 न॥ द्रीरघमंड्डसांडुन॥ इष्ट्युरतेसप्तलेनां॥ ८॥ तेसावलिक्ष्यवत्
 रल्लजाय॥ तेवोंजाधीवकलेंगायप॥ इतरबहिर्मुखब्रह्मण॥ रामनी
 धाननोक्षवति॥ ९॥ प्रत्ययन् तारदुविश्वाप्वारतितुक्ष्यनावार
 क्षर्पतेंप्रपथोग॥ पीशाब्रनरतोऽस्योऽ॥ तेवोंद्वेलेंवेदपठण॥ करनवा
 मलवास्त्रप्रमाण॥ परीतेंमध्यवीणावेंभाषण॥ राघविंशतिनरीघतां॥ १०
 ॥ जेसीमुग्धवतिसलश्चर्णीपरमसौंदर्पनानुर्घवाणी॥ परीमननाहीप
 तिभजन्निं॥ तरीसर्वहीत्रशागेते॥ ११॥ वरदलीसवंदनदेख॥ परीनेवोतो १२



१६४

मुवाससुख॥ वाजरसीं प्रीरके जेदर्विपाक्॥ रसस्वादनेषोत्तो॥ ७८॥ हृषीकेशी
तांसीतावरा॥ काये सम्बर्षतत्त्वविवर॥ पात्रें जानन्त्वे सावरा॥ जेसेंकी
रजनुवाहति॥ ७९॥ तेणांकेलेंतिष्ठिटण॥ होये वौ सल्लक्ष्मा प्रवीण॥ तेणों
केलेंजेंकी तन॥ तेंजाएंगायन गरीयावें॥ ८०॥ आपासोर द्वय पति ससांउ
दिविप्र॥ यछोतिगे लेसमग्र॥ दूरगहंशुर द्वयिण॥ पात्रें स्वरपनेषोनियां
॥ ८१॥ आतंगाहो बहुंतभाषण॥ अरीरात्यीक्रुरीत्यागुण॥ वाल्मीकीत्रयि
सनमुन॥ दंउद्वारयांवाचि॥ वापदारामवीजयेग्रंशजावंडा॥ येष्टेसंप
लेंप्रायोध्याकांउ॥ आतांप्रारथपद्मार प्रक्षंड॥ सुरसप्रासेबहुंतपटों॥ ८२॥
॥ रामविजयेग्रंशस्थीरसमारा॥ हृषीतदलेंनिद्यति आपारा॥ संतश्रोतेहोनि
र्जर॥ अंगीकपोतमर्वदा॥ ८३॥ धात्रेमहानंदरक्षुरभुषणां॥ श्रीधरवरदा



(15)

सीताजीविणां॥ पुर्दें आरपयकां उरन्वनां॥ कोलावें आतां गेशुनी॥७९॥
श्रीगम्भीजयेग्रं असुंदर॥ मंजतवालि कृनाटकाधार॥ महायरीसोतपं उत्तव
तुर॥ हादवो धायामोउहा॥५॥ आमा१मा संपर्कः॥८०॥८१॥८२॥



४६



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com